12-03-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

"मीठे बच्चे - यह पढ़ाई सोर्स ऑफ इनकम है, इससे तुम मनुष्य से देवता बनते हो, 21 जन्मों के लिए सच्ची कमाई हो जाती है"

m.m.m....imp.

प्रश्नः- बाप जो मीठी-मीठी बातें सुनाते हैं वह धारण कब होंगी?

Refer pg-16

उत्तर: जब बुद्धि पर परमत वा मनमत का प्रभाव नहीं होगा। जो बच्चे सुनी सुनाई बातों पर चलते हैं, उनकी बुद्धि में धारणा हो नहीं सकती। सिवाए ज्ञान के और कुछ भी कोई सुनाता है तो वह जैसे दुश्मन है। झूठी बातें सुनाने वाले बहुत हैं इसलिए हियर नो ईविल, सी नो ईविल, मनुष्य से देवता बनने के लिए एक बाप की श्रीमत पर ही चलना है।

आज कल के main source ⇒ Social Media

ये पक्का समझ लो..

Attention..!

That's All

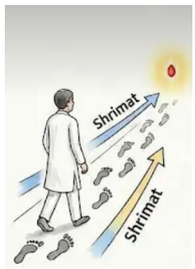

गीत:-हमारे तीर्थ न्यारे हैं .. Click

> हमारे तीरथ न्यारे हैं, यही धरती के तारे हैं
> हमारे तीरथ न्यारे हैं, यही धरती के तारे हैं
> हमारे तीरथ न्यारे हैं, यही धरती के तारे हैं
> यहां पाप मिट जाया करते
> यहां पाप कट जाया करते
> यहां मैल मन का धुल जाता
> यहां पार प्रभु का खुल जाता
> बड़े-बड़े अन्यायी, इनके द्वारे गए उबारे हैं
> हमारे तीरथ न्यारे हैं, यही धरती के तारे हैं
> जो भी इनका करता फेरा
> होता उसका दूर अंधेरा
> यही भूमि को स्वर्ग बनाते
> यही सत्य का मार्ग दिखाते
> पाप पुण्य की यही कसौटी, सब के यही सुनारे हैं
> हमारे तीरथ न्यारे हैं, यही धरती के तारे हैं
> इन घाटों का इन नदियों का, निर्मल मंगल नीर
> पुण्य आचमन करके जिसका, पावन हुआ शरीर
> गंगा यमुना सरस्वती का, जल प्रभु के पग धोता है
> गंगा जल सीमा पे ये जीवन, सफल सभी का होता है
> यही चंद्रभागा का तट है
> यह कृष्णा का तीर है
> प्रभु ने अपने हाथों के, छापे करोड़ों लकीर है
> हमारे तीरथ न्यारे हैं, यही धरती के तारे हैं

ओम् शान्ति। इस गीत में जैसेकि अपनी महिमा

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

करते हैं। अपनी महिमा वास्तव में की नहीं जाती है। यह तो सब समझने की बातें हैं जो भारतवासी बहुत समझदार थे, अभी बेसमझ बने हैं। अब प्रश्न उठता है, समझदार कौन थे? यह कहाँ भी लिखा हुआ नहीं है। तुम हो गुप्त। कितनी वण्डरफुल बातें हैं। एक तो बाप कहते हैं मेरे द्वारा ही बच्चे मुझे जान सकते हैं। फिर मेरे द्वारा सब कुछ जान जाते हैं। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का जो खेल है, उनको समझ जाते हैं। और कोई भी नहीं जानते और एक मुख्य भूल की है जो निराकार परमपिता परमात्मा शिव के बदले श्रीकृष्ण का नाम डाल दिया है। पहला नम्बर शास्त्र जिनको श्रीमत भगवत गीता कहते वही रांग हो गया है इसलिए पहले-पहले तो सिद्ध करना है कि भगवान एक है। फिर पूछना है गीता का भगवान कौन? भारत का आदि सनातन देवी देवता धर्म है। अगर नया धर्म कहें तो ब्राह्मण धर्म ही कहेंगे। पहले चोटी है ब्राह्मण फिर देवतायें। ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण धर्म है। जो ब्राह्मण ब्रह्मा द्वारा परमपिता परमात्मा रचते हैं, वही ब्राह्मण फिर देवता बनते हैं। मुख्य बात है

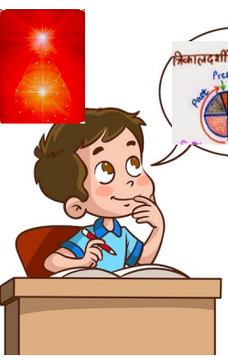

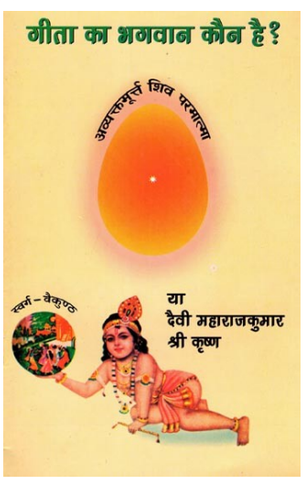

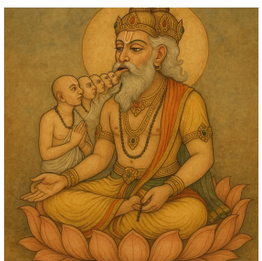

12-03-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

भगवान सबका बाप है, नई दुनिया का रचयिता। जरूर नई दुनिया ही रचेंगे ना। नई दुनिया में नया भारत होता है। जन्म भी भारत में लिया है। भारत को ही स्वर्ग बना रहे हैं ब्रह्मा द्वारा। तुमको अपना बनाकर फिर पढ़ाते हैं मनुष्य से देवता बनाने। पहले तुम शूद्र वर्ण के थे फिर आये ब्राह्मण वर्ण में फिर दैवी वर्ण में। पीछे वृद्धि होती रहती है। एक धर्म से अनेक धर्म हो जाते हैं। टाल टालियाँ भी सब धर्मों की बन जाती हैं, हर एक धर्म से निकलती हैं। तीन ट्युब्स होती हैं ना। यह है मुख्य। हर एक से अपनी-अपनी शाखायें निकलती हैं। मुख्य है फाउण्डेशन फिर तीन ट्युब्स हैं मुख्य। थुर है आदि सनातन देवी देवता धर्म का। जो अभी सब राजयोग सीख रहे हो। देलवाड़ा मन्दिर बड़ा अच्छा बना हुआ है, उनमें सारी समझानी है। बच्चे यहाँ बैठे हैं कल्प पहले भी तुमने राजयोग की तपस्या की थी। जैसे क्राइस्ट का यादगार क्रिश्चियन देश में है। वैसे तुम बच्चों ने यहाँ तपस्या की है तब तुम्हारा भी यादगार यहाँ है। है बड़ा सहज। परन्तु कोई भी जानते नहीं हैं। संन्यासी लोग तो कह देते

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

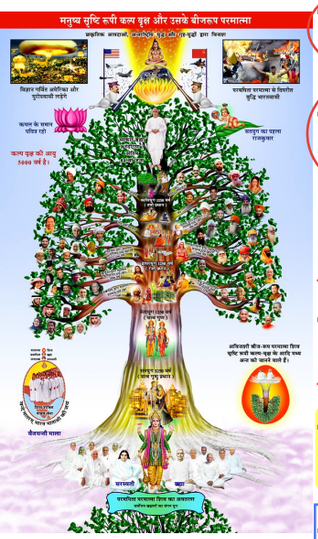

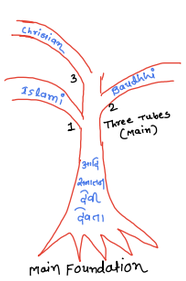

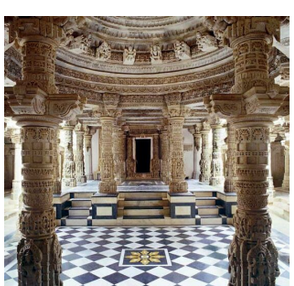

हैं यह सब कल्पना है, जैसी जो कल्पना करे। तुम्हारे लिए भी कहते हैं यह चित्र आदि सब कल्पना से बनाये हैं। जब तक बाप को जानें, कल्पना ही समझते हैं। नॉलेजफुल तो एक बाप है ना। तो मुख्य है बाप का परिचय देना। वह बाप स्वर्ग का वर्सा देते हैं, कल्प पहले भी दिया था। फिर 84 जन्म लेना पड़े। भारतवासियों के ही 84 जन्म होते हैं। फिर संगमयुग पर बाप आकर राजधानी की स्थापना करते हैं। तुम बच्चों ने बाप द्वारा समझा है। जब अच्छी रीति समझें, बुद्धि में बैठे तब खुशी भी रहे।

How Great we are...!

यह पढ़ाई बड़ी सोर्स ऑफ इनकम है। पढ़ाई से ही मनुष्य बैरिस्टर आदि बनते हैं। लेकिन यह पढ़ाई मनुष्य से देवता बनने की है। प्राप्ति कितनी भारी है। इन जैसी प्राप्ति कोई करा न सके। ग्रंथ में गाया हुआ है - मनुष्य से देवता किये करत न लागी वार। परन्तु मनुष्यों की बुद्धि चलती नहीं। जरूर वह

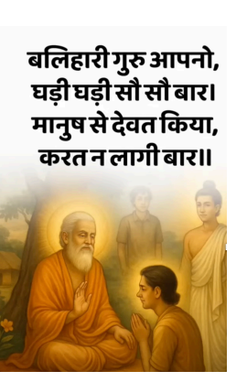

अर्थ:
कबीरदास जी कहते हैं कि मैं अपने गुरु पर हर घड़ी (पल) सौ-सौ बार न्यौछावर जाता हूँ, जिन्होंने मुझे (साधारण) मनुष्य से देवता बनाने में ज़रा भी देर नहीं लगाई। यह गुरु के ज्ञान और शिक्षा की महानता को दर्शाता है, जो इंसान के गुणों को बदल देता है।

Most imp

12-03-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

देवी-देवता धर्म प्राय:लोप हो गया है, तब तो लिखते हैं मनुष्य से देवता बनें। देवतायें सतयुग में थे। उन्हों को जरूर भगवान ने संगम पर रचा होगा। कैसे रचा? यह नहीं जानते। गुरू नानक ने भी परमात्मा की महिमा गाई है। उन जैसी महिमा

कोई ने नहीं गाई है इसलिए ग्रंथ को भारत में पढ़ते हैं। गुरूनानक का कलियुग में अवतार होता है। वह है धर्म स्थापक। राजाई तो पीछे हुई है। बाप ने तो यह देवी देवता धर्म स्थापन किया है। वास्तव में नई दुनिया ब्राह्मणों की ही कहें। चोटी भल ब्राह्मणों की है परन्तु राजधानी देवी देवताओं से शुरू होती है। तुम ब्राह्मण रचे हुए हो। तुम्हारी राजधानी नहीं है। तुम अपने लिए राजधानी स्थापन करते हो।

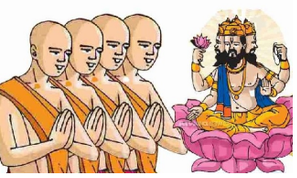

बड़ी वण्डरफुल बातें हैं। मनुष्य तो कुछ नहीं जानते हैं। पहले-पहले अपने को मालूम हुआ तो

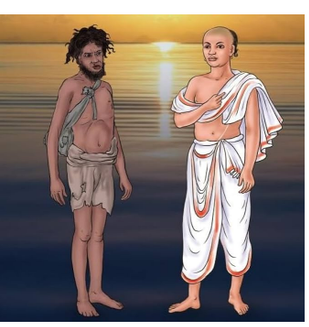

अपने द्वारा दूसरों को मालूम होता है। तुम शूद्र से ब्राह्मण बने हो। ब्रह्मा को भी अभी बाप द्वारा मालूम पड़ता है। एक को बताया तो बच्चों को भी बताना होता है। उनके तन द्वारा तुम बच्चों को बैठ समझाते हैं। यह है अनुभव की बातें। शास्त्रों से तो

In between other 82 births of that Soul comprises Umbilical cord of Vishnu Represents that the Vishnu himself becomes brahma After 84 births.

कोई कुछ भी समझ न सके। बाप कहते हैं सारे कल्प में एक ही बार मैं ऐसे ही आकर समझाता हूँ। और अनेक धर्मों का विनाश, एक धर्म की स्थापना कराता हूँ। यह 5 हजार वर्ष का खेल है। तुम बच्चे जानते हो हमने 84 जन्म लिए हैं। विष्णु की नाभी से ब्रह्मा दिखाते हैं। ब्रह्मा और विष्णु यह किसके बच्चे हैं? दोनों बच्चे ठहरे शिव के। वह है रचयिता, वह रचना। इन बातों को कोई समझ न सके। बिल्कुल नई बात है। बाबा भी कहते हैं यह नई बातें हैं। कोई शास्त्रों में यह बातें हो न सके। ज्ञान का सागर बाप है, वही गीता का भगवान है। भक्ति मार्ग में शिव जयन्ती भी मनाते हैं। सतयुग त्रेता में नहीं मनाते। तो जरूर संगम पर ही आते होंगे। यह बातें तुम समझते जाते हो और समझाते रहते हो। जो समझाने वाले बाप की महिमा है, वह बच्चों की होनी चाहिए। तुमको भी मास्टर ज्ञान का सागर बनना है। प्रेम का सागर, सुख का सागर यहाँ बनना है। किसको दु:ख नहीं देना है। बहुत मीठा बनना है। तुम जो कड़ुवे एकदम जहर मिसल थे, सो तुम वाइसलेस ब्राह्मण बन रहे हो। ईश्वर की

NOW on संगम

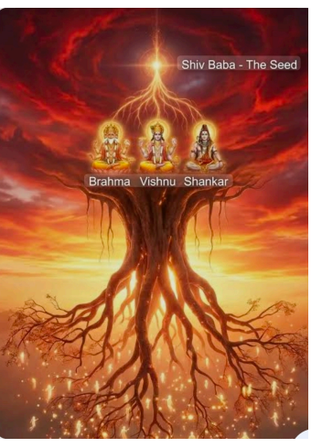

सन्तान बन रहे हो। विशश से वाइसलेस देवता बन रहे हो। आधाकल्प तुम पतित बनते-बनते अभी बिल्कुल जड़जड़ीभूत अवस्था को पाये हुए हो।

सड़े हुए कपड़ों को सटका लगाने से फटकर चीर-चीर हो जाते हैं। यहाँ भी ज्ञान के सटके लगाओ तो पुर्जा-पुर्जा हो जाते हैं। कोई कपड़ा ऐसा मैला है जो साफ करने में बहुत टाइम लगता है। फिर वहाँ भी हल्का पद मिल जाता है। बाबा धोबी है। तुम भी साथ में मददगार हो। धोबी भी नम्बरवार होते हैं। यहाँ भी नम्बरवार हैं। धोबी अच्छे कपड़े साफ न करे तो कहेंगे ना कि यह तो जैसे हज़ाम है। आजकल कपड़े साफ धुलाने सीखे हैं। आगे गांवड़ों में तो बहुत मैले कपड़े धुलाई होते थे। यह हुनर भी बाहर वालों से आया है। बाहर वाले कुछ इज्जत देते हैं। पैसे आदि की मदद करते हैं। जानते हैं यह बहुत बड़ी बिरादरी वाले हैं। अब नीचे गिरे हैं। गिरने वालों पर तरस पड़ता है ना। बाप कहते हैं तुमको कितना धनवान बनाया था। माया ने क्या हालत कर दी है। तुम अभी समझते हो हम विजय माला के थे, फिर 84 जन्म ले क्या

ज्ञान और योग

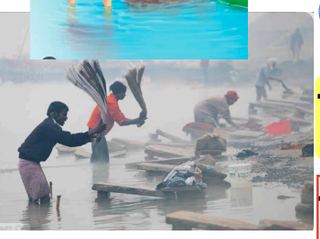

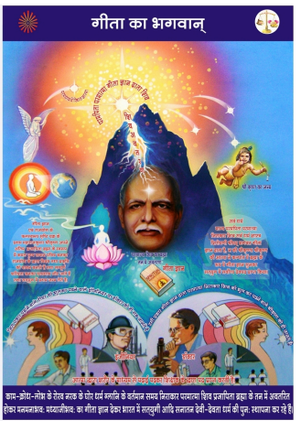

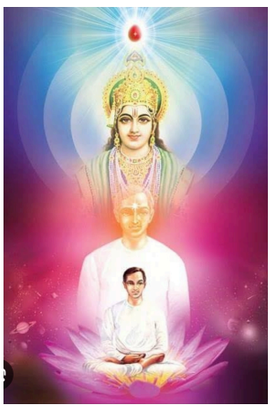

जाकर बने हैं। वण्डर है ना। तुम समझा सकते हो, तुम भारतवासी तो स्वर्गवासी थे। भारत ही स्वर्ग था फिर नीचे गिरते-गिरते नर्कवासी भी बनना पड़े। अब बाप कहते हैं - पवित्र बन स्वर्गवासी बनो। मनमनाभव। शिव भगवानुवाच मामेकम् याद करो। याद की यात्रा से तुम्हारे सब पाप नष्ट हो जायेंगे। शास्त्रों में लिखा है - श्रीकृष्ण ने भगाया, पटरानी बनाने। तुम सब पढ़ रहे हो, पटरानी बन रहे हो। परन्तु इन बातों को कोई समझ नहीं सकते हैं। अब बाप ने आकर बच्चों को समझाया है। बाप कहते हैं मैं कल्प-कल्प तुमको समझाने आता हूँ तो पहले भगवान एक है, यह सिद्ध कर फिर बताओ गीता का भगवान कौन है। राजयोग किसने सिखाया है? भगवान ही ब्रह्मा द्वारा स्थापना कराते हैं और विनाश फिर पालना कराते हैं। यह जो ब्राह्मण हैं वही फिर देवता बनते हैं। यह बातें भी समझ में उन्हों को आयेंगी जिन्होंने कल्प पहले समझा है। सेकेण्ड बाई सेकेण्ड जो हुआ इस समय तक समझेंगे। ड्रामा में तुम्हें बहुत पुरुषार्थ करना है। यह तो बच्चे समझते हैं अभी हमारी वह

Mind very well...

अवस्था नहीं हुई है। टाइम लगेगा। कर्मातीत अवस्था हो जाए तो फिर सब नम्बरवन पास हो जाएं फिर तो लड़ाई भी लग जाती। आपस में खिटपिट चलती ही रहेगी। तुम जानते हो जहाँ तहाँ देखो लड़ने की तैयारियाँ कर रहे हैं। सब तरफ तैयारियाँ कर रहे हैं। तुमने जो कुछ दिव्य दृष्टि से देखा है वह फिर इन आंखों से देखना है। विनाश का साक्षात्कार किया है फिर वैसे आंखों से देखेंगे। स्थापना का भी साक्षात्कार किया है फिर प्रैक्टिकल में राजाई भी देखेंगे। तुम बच्चों को तो बहुत खुशी होनी चाहिए। यह तो पुराना तन है। योग से आत्मा पवित्र बन जायेगी, फिर यह पुराना शरीर भी छोड़ना है। 84 जन्मों का चक्र पूरा होता है फिर जरूर सबको नये शरीर मिलेंगे। यह भी समझने की बहुत सहज बातें हैं। समझा भी सकते हैं, कलियुग के बाद सतयुग जरूर होगा। अनेक धर्मों का विनाश जरूर होगा। फिर आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना अर्थ बाप को आना पड़े। अभी तुम ब्राह्मण बने हो देवता बनने के लिए। दूसरे कोई हो न सके। तुम जानते हो हम

Example:-
Iran v/s USA & Israel
Russia v/s Ukrain
China v/s Taiwan
Pakistan v/s Afghanistan
India v/s Pakistan
Thailand v/s Comboodia
And many more...
many

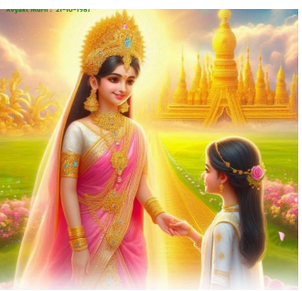

शिवबाबा के बने हैं, शिवबाबा हमको वर्सा दे रहे हैं।

शिव जयन्ती माना ही भारत को वर्सा मिला। शिवबाबा आया, क्या आकर किया। इस्लामी, बौद्धी आदि ने तो आकर अपना धर्म स्थापन किया। बाप ने आकर क्या किया? जरूर स्वर्ग की स्थापना की। कैसे स्थापना की, कैसे स्थापना होती है सो तुम अभी जानते हो। फिर सतयुग में यह सब भूल जायेंगे। यह भी समझते हो 21 जन्मों का वर्सा अभी हम ले लेते हैं। यह ड्रामा में नूँध है। भल वहाँ समझेंगे यह बाप है, यह बच्चा है। बच्चे को वर्सा मिलता है। परन्तु यह प्रालब्ध है अभी की। सच्ची कमाई कर 21 जन्मों के लिए तुम वर्सा अभी पा रहे हो। 84 जन्म तो लेने ही हैं। सतोप्रधान से फिर सतो रजो तमो में आयेंगे। यह अच्छी रीति याद करने से फिर खुशी में भी रहेंगे। समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। जब समझ

समझा?

जाते हैं तो उनको बड़ी खुशी होती है। जो बच्चे अच्छी रीति समझते हैं वह फिर बहुतों को समझाते रहते हैं। काँटों को फूल बनाते रहते हैं। यह है बेहद की पढ़ाई। वर्सा भी बेहद का मिलता है। फिर इसमें त्याग भी बेहद का है। गृहस्थ व्यवहार में रहते सारी दुनिया का त्याग करना है क्योंकि तुम जानते हो यह पुरानी दुनिया खत्म होनी है। अब नई दुनिया में जाना है इसलिए बेहद का संन्यास कराते हैं। संन्यासियों का है हद का संन्यास और उनका है हठयोग। इसमें हठ की बात नहीं रहती। यह तो पढ़ाई है। पाठशाला में पढ़ना है, मनुष्य से देवता बनने के लिए। शिव भगवानुवाच - श्रीकृष्ण हो न सके। उनको हेविनली गॉड फादर नहीं कहेंगे। हेविनली प्रिन्स कहेंगे तो कितनी मीठी -मीठी बातें समझने और धारण करने की हैं। दैवी लक्षण भी चाहिए। कभी भी सुनी सुनाई बातों पर नहीं लगना चाहिए। व्यास की लिखी हुई बातों पर लगते-लगते बुरी गति हुई है ना। सिवाए ज्ञान के और कुछ सुनाते हैं तो समझो यह हमारा दुश्मन है। दुर्गति में ले जाते हैं। कभी भी परमत पर नहीं

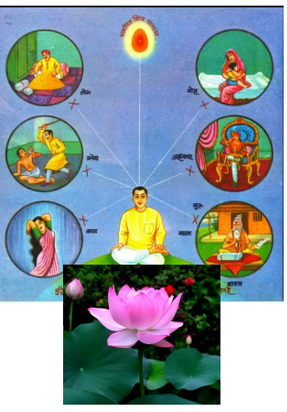

Attention Please..!

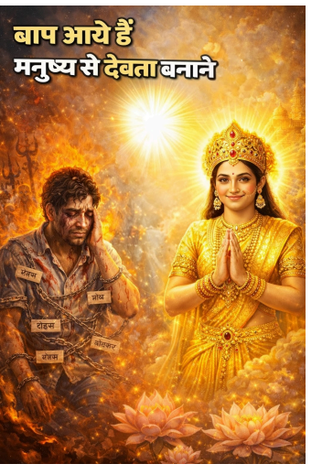

लगना चाहिए। मनमत, परमत पर चला तो यह मरा। बाप समझाते रहते हैं झूठी बातें बोलने वाले तो बहुत हैं। तुमको बाप से ही सुनना है। हियर नो ईविल, सी नो ईविल..... बापदादा आये ही हैं मनुष्य से देवता बनाने तो उनकी श्रीमत पर चलना चाहिए। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का यादप्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) यहाँ बाप समान सुख का सागर, प्रेम का सागर बनना है। सर्वगुण धारण करने हैं। किसी को भी दु:ख नहीं देना है।

2) सुनी-सुनाई बातों पर कभी विश्वास नहीं करना है, परमत पर नहीं चलना है। हियर नो ईविल, सी नो ईविल....

Method/Process/Instrument

Outcome/Output/Result

12-03-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

वरदान: मैं पन के बोझ को समाप्त कर प्रत्यक्षफल का अनुभव करने वाले बालक सो मालिक भव

Finale Achievement

most imp to understand

जब किसी भी प्रकार का मैं पन आता है तो बोझ सिर पर आ जाता है।

लेकिन जब बाप आफर कर रहे हैं कि सब बोझ मुझे दे दो आप सिर्फ नाचों, उड़ो...फिर यह क्वेश्चन क्यों - कि (1) सर्विस कैसे होगी, (2) भाषण कैसे करेंगे -

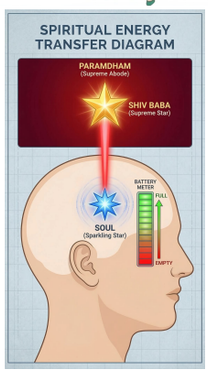

आप सिर्फ निमित्त समझकर कनेक्शन पावर हाउस से जोड़कर बैठ जाओ, दिलशिकस्त नहीं बनो तो बापदादा सब कुछ स्वत: (Automatically) करा देंगे।

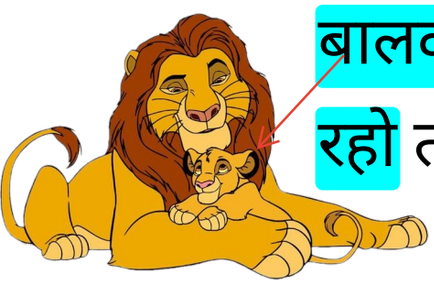

बालक सो मालिक समझकर श्रेष्ठ स्टेज पर स्थित रहो तो प्रत्यक्ष फल की अनुभूति करते रहेंगे।

स्लोगन:- ज्ञान दान के साथ-साथ गुणदान करो तो सफलता मिलती रहेगी।

ये अव्यक्त इशारे-

"निश्चय के फाउण्डेशन को मजबूत कर सदा निर्भय और निश्चिंत रहो"

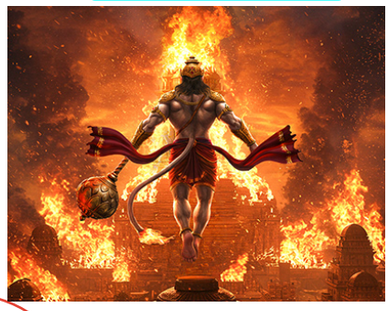

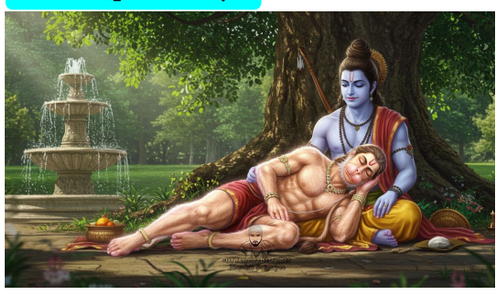

कैसी भी कड़ी परिस्थिति हो लेकिन खेल समझने से कड़ी समस्या भी हल्की बन जाती है।

कई बच्चों में हिम्मत है इसलिए कोई भी बात होती है तो कहते हैं - हां करेंगे, सोचेंगे। हिम्मत तो है, लेकिन फेथ नहीं है। फेथफुल के बोल ऐसे नहीं होते।

फेथफुल का अर्थ ही है - मन, वचन, कर्म हर बात में निश्चयबुद्धि, उनके मुख से कभी हिम्मतहीन बनाने वाले शब्द नहीं निकल सकते।

भक्ति मार्ग में हनुमान की इतनी महिमा क्यों है?

क्योंकि उन्होंने अपनी बुद्धि को कहीं पर चलाया नहीं और जो राम ने कहा उसको as it is करके दिखाया इसलिए तो भक्त लोग पहले ही दोहे में condition रखते हैं कि (बुद्धिहीन तनु जानिके सुमिरौं पवनकुमार ।) हे हनुमान, आपको हम (राम के सम्मुख) बुद्धि हीन जानकर पुकार रहे हैं...क्योंकि श्री राम के आगे आपने कभी भी अपनी बुद्धि नहीं चलाई और जो भी श्री राम ने कहा उसको हाँ जी कहकर As it is follow किया (नहीं तो किसीको बुद्धिहीन कहना तो जैसे उसकी insult है लेकिन दुनियवी रीति की वही insult हनुमान के लिए सभी शक्तियों और महिमा का स्त्रोत है।)
फिर उसकी महिमा जो भी है _जय हनुमान ज्ञान गुण सागर, जय कपीस तिहुं लोक उजागर_ शुरू करते है...

तो सबसे ऊंचा समर्पण मन-बुद्धि-संस्कारो का है। बाप दादा जो कहे वो ही करना है,
अगर भरी दोपहरी धूप में बापदादा कहे की "ये रात है" तो हमारे लिए भी रात है, एक संकल्प मात्र भी कुछ और न चले। क्योंकि माया के चक्रव्यूह को समझने के लिए हम असमर्थ है और वो सर्वशक्तिमान, मायापति सभी चक्रव्यूह को जानते है तो वो जो भी कहेंगे उसमें ही हमारा कल्याण निश्चित समाया हुआ है।